



दलहन क्षेत्र में कृषक महिलाओं की भूमिका

उमा साह*, जीतेन्द्र ओझा*, विक्रान्त सिंह*, रेखा रानी* और शांतनु कुमार दुबे*

दालें, भारतीय आहार का एक अभिन्न अंग हैं। ये देश में शाकाहारी आबादी के लिए दैनिक प्रोटीन का अपेक्षाकृत सस्ता व आसानी से उपलब्ध स्रोत हैं। इनमें लगभग 20-25 प्रतिशत प्रोटीन की मात्रा पाई जाती है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण वर्ष 2011-12 के अनुसार दालें भारतीयों के कुल आहार एवं इसके साथ ही प्रोटीन सेवन में औसतन 10.4-40 प्रतिशत का योगदान देती हैं। देश में मुख्यतः चना, अरहर, मूंग, उड़द, मसूर, मटर, लोबिया, खेसारी, मोठ आदि दलहनी फसलों का उत्पादन व उपभोग होता है। दलहनी फसल उत्पादन में महिला कृषकों का भी योगदान अहम होता जा रहा है।

देश में दालों की बढ़ती खपत की पूर्ति हेतु इन फसलों का उत्पादन लगभग 28.83 मिलियन हैक्टर भूमि पर क्षेत्रीय पसंद व कृषि पारिस्थितिकी के अनुरूप किया जाता है। जनसंख्या वृद्धि दर को ध्यान में रखते हुए देश में वर्ष 2030 तक दलहन की मांग 32 मिलियन टन तथा वर्ष 2050 तक 39 मिलियन टन होने का अनुमान है। इस मांग वृद्धि को पूरा करने के लिए अनुसंधान के अग्रणी क्षेत्रों में क्षमता निर्माण के साथ-साथ अनुसंधान, प्रौद्योगिकी उत्पादन, प्रसार तथा व्यावसायीकरण में एक एकीकृत कार्य प्रणाली की आवश्यकता है।

*भाकृअनुप-भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर, *भाकृअनुप-कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कानपुर

दालों को मुख्य रूप से करी के रूप में पकाया जाता है। इसके अलावा, विभिन्न प्रकार के भारतीय व्यंजन तैयार करने में दालों का व्यापक रूप से उपयोग होता है। देश में क्षेत्रीय आधार पर दालों और उनके उत्पादों की खपत में लोगों की आहार संबंधी प्राथमिकताओं में भारी भिन्नता देखने को मिलती है। देश में दालों की खेती और खपत में विविधता, इस क्षेत्र में उद्यमिता विकास की अपार संभावनाएं प्रदान करती हैं।

उद्यमिता विकास का आशय विभिन्न कार्यक्रमों और प्रशिक्षण के माध्यम से उद्यमी के ज्ञान और कौशल को बढ़ाना है। उद्यमिता विकास प्रक्रिया, उद्यमियों को बेहतर निर्णय लेने और सभी व्यावसायिक गतिविधियों के लिए एक समझ भरा निर्णय लेने के लिए

प्रोत्साहित करती है। इसके साथ ही इसका संबंध एवं प्रक्रिया वांछनीय एवं तकनीकी ज्ञान प्राप्त करने से है। इसमें वित्तीय, विपणन और प्रबंधकीय विशेषज्ञता एवं उद्यमशीलता के दृष्टिकोण शामिल हैं।

दलहन क्षेत्र में दलहन प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन, दलहन बीज उत्पादन, भंडारण, जैव उत्पादों के निर्माण आदि में उद्यमिता की अपार संभावनाएं व्याप्त हैं।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए दलहन प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन द्वारा महिला कृषकों में उद्यमिता विकास को प्रेरित करने के लिए अहम कदम उठाए गए हैं। भाकृअनुप-भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर की फॉर्मर फर्स्ट परियोजना के अंतर्गत फतेहपुर जनपद के परियोजना ग्रामों में 11 सदस्यीय महिला कृषक समिति 'नमामि गंगे महिला कृषि उद्योग समिति, खदरा, फतेहपुर' का गठन 5 अक्टूबर 2020 को किया गया था। संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा समय-समय पर 11 सदस्यीय महिला कृषक समिति हेतु दलहन प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन आधारित उद्यमिता विकास के लिए अनवरत प्रयास किये जाते रहे हैं।

भारत में दलहन प्रसंस्करण, गेहूं और धान प्रसंस्करण के बाद तीसरे नंबर का खाद्य प्रसंस्करण उद्योग है। दालों की खपत छिलका उतारने के बाद की जाती है, जिसे दाल मिलिंग कहते हैं। मिलिंग से पहले बीजपत्रों से बीजावरण को ढीला करने के लिए पूर्व-मिलिंग जैसे-पानी में भिगोना, तेल मिलाना और अनाज को गर्म करना आदि उपचार किए जाते हैं। भूसी और दालों का विभाजन आमतौर पर लगातार पास में अपघर्षक रोलर्स की मदद से किया जाता है। दलहन प्रसंस्करण संबंधित उद्यमिता विकास के उद्देश्य से भाकृअनुप-भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर ने कई उन्नत तकनीकियां विकसित की हैं, जिनमें लघु दाल मिलों का विकास भी सम्मिलित है। इन मिनी दाल मिलों को देश के विभिन्न हिस्सों में अपनाया गया है। संस्थान द्वारा निर्मित मिनी दाल मिल न केवल उत्पाद के मूल्यवर्धन की क्षमता रखती है, बल्कि ग्रामीण आबादी को उत्पाद उपलब्ध करवाकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूत करने में सक्षम है। इसके अतिरिक्त संस्थान द्वारा विभिन्न मशीनरी जैसे दाल चक्की, बहुदेशीय ग्राइंडर, पिजनपी स्ट्रपर, सेक्शन विनोवर, हॉरिजॉन्टल हैंड चक्की, वर्टिकल हैंड चक्की,

दाल मिलिंग से मूल्यवर्धित उत्पाद, उत्पादों का व्यावसायीकरण करने के लिए तैयार किये गए हैं। प्रसंस्करण के अतिरिक्त प्रोटीन और एंटी-ऑक्सीडेंट की प्रचुरता वाले, मिलिंग उपोत्पाद का उपयोग बिस्कुट, ब्रैड, बन, मफिन, केक, इडली, डोसा, सूप तथा दाल प्रोटीन के स्रोत के रूप में अनेक उद्यमियों की आय बढ़ाने में सफल साबित हो सकता है। दाल प्रसंस्करण में थोक व्यापारी, संसाधक और खुदरा विक्रेताओं की शृंखला, उत्पादक की तुलना में अधिक लाभ अर्जित करती है। ग्राम्यस्तर पर प्रसंस्करण के अभाव में उत्पादक अनाज को सस्ते दर पर बेचता है। ग्राम्यस्तर पर दाल प्रसंस्करण की अवधारणा महत्वपूर्ण है। इससे ग्रामीण उद्यमियों की आय और रोजगार के अवसर के अलावा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी। युवा उद्यमियों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों के लिए उपयुक्त दाल-प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियों में ग्रामीण आय और रोजगार के अवसरों को बढ़ाने की अपार क्षमता है। इसी क्रम में ग्राम्यस्तर पर दलहन प्रसंस्करण एवं मूल्यवर्धन से संबंधित उद्यमिता कौशल को विकसित करने के उद्देश्य से 'नमामि गंगे महिला कृषि उद्योग समिति, खदरा, फतेहपुर' को 8 से 10 फरवरी 2022 के दौरान 'दलहन प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी' पर तीन दिवसीय अनुभवात्मक प्रशिक्षण दिया गया था। इसमें महिला कृषकों को आय बढ़ाने के लिए दलहन प्रसंस्करण के साथ-साथ दलहन

संस्था की स्थापना

संस्थान के वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में दिनांक 14 फरवरी 2022 को परियोजना से जुड़े 11 सदस्यीय महिला कृषक समिति 'नमामि गंगे महिला कृषि उद्योग समिति, ग्राम-खदरा, जिला-फतेहपुर' को आई.आई.पी.आर. मिनी दाल मिल प्रदान की गई। यह महिला कृषकों की आय बढ़ाने में मददगार साबित हो रही है। संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा बताये गए तकनीकी ज्ञान का सदुपयोग कर, आर. मिनी दाल मिल द्वारा महिला कृषकों ने चना दाल (1 क्विंटल), मूंग दाल (75 कि.ग्रा.), उड़द दाल (50 कि.ग्रा.), अरहर दाल (30 कि.ग्रा.) तथा बेसन (30 कि.ग्रा.) आदि प्रसंस्करित उत्पादों का उत्पादन, पैकिंग एवं लेबलिंग कर ग्राम स्तर पर विपणन करना शुरू किया है। संस्थान के वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में महिला कृषक समिति द्वारा बनाये जा रहे प्रसंस्करित उत्पाद की गुणवत्ता सुनिश्चित करने तथा उद्यम प्रमाणीकरण के लिए समिति को भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसआई) प्रमाणीकरण (प्रमाण पत्र संख्या 12722007000019) तथा उद्यमिता प्रमाण पत्र (प्रमाण पत्र संख्या UDYAM-UP-26-00004484) भी प्राप्त हैं।

मूल्यसंवर्धन के लिए भी प्रेरित किया गया था। इसी प्रशिक्षण कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा आई.आई.पी.आर. मिनी दाल मिल के संचालन, बेसन के रूप में दालों का मूल्यवर्धन आदि पर व्यावहारिक प्रशिक्षण तथा प्रसंस्करित उत्पाद की ब्रांडिंग और मार्केटिंग संबंधित जानकारी भी प्रदान की गयी। प्रशिक्षण के दौरान महिला कृषक समूह ने मूंग की दाल और बेसन बनाकर, पैकिंग तथा लेबलिंग कर 10 फरवरी 2022 को विश्व दलहन दिवस के अवसर पर संस्थान के कृषि व्यवसाय ऊष्मायन इकाई के बिक्री केंद्र 'दलहन हाट' में प्रदर्शन एवं विक्रय किया था। इसके साथ ही महिला कृषक समूह द्वारा अन्य प्रसंस्करित उत्पादों

जैसे उड़द दाल, चना दाल तथा अरहर दाल आदि का प्रदर्शन एवं विक्रय भी किया गया था। इस प्रशिक्षण से प्रेरित होकर समूह की महिला सदस्यों ने दलहन प्रसंस्करण एवं मूल्यवर्धन के विषय में उद्यम स्थापित करने का निश्चय किया।

महिला कृषकों द्वारा दलहन क्षेत्र में उद्यम स्थापित करने के लिए किये गये प्रयास अत्यंत सराहनीय हैं। उम्मीद की जाती है कि भविष्य में यह महिला कृषक समिति दलहन प्रसंस्करण एवं मूल्यसंवर्धन के क्षेत्र में दलहन उद्यम को और भी बड़े स्तर पर स्थापित करने में सफल होगी व साथ ही अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बनेगी। ■

भाकृअनुप की मासिक लोकप्रिय पत्रिका 'खेती' फरवरी, 2024 अंक के प्रमुख आकर्षण

- ◆ शक्तिवालि श्रेश्ठ से गेहूं की मड़ाई
- ◆ कृषि में जल विलेय उर्वरकों का प्रयोग
- ◆ पौधशाला से बढ़ाएं आमदनी
- ◆ अधिक मुनाफा लेमनघास से
- ◆ डीगा के वाइब्रिओसिस रोग की रोकथाम
- ◆ मक्का में पोषक तत्वों की कमी से रोग
- ◆ मछलीपालन में एंटीबायोटिक्स का प्रभाव
- ◆ वैकल्पिक चारा है अजोला
- ◆ टिकाऊ खेती है आधुनिक समय की मांग
- ◆ चरागाह के शत्रु पौधे
- ◆ कृषि में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की उपयोगिता
- ◆ दलहनी फसलों में खरपतवार नियंत्रण
- ◆ सोयाबीन के फायदे अनेक
- ◆ कृषि में स्थानीय बीज बैंकों की भूमिका

संपर्क सूत्र: प्रभारी, व्यवसाय एकक, भाकृअनुप-कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय, कैब-1, पूसा गेट, नई दिल्ली-110012
दूरभाष: 25843657, www.icar.org.in